जॉनी एप्पलसीड

ने बोये सेब के बीज



जॉनी एप्पलसीड

ने बोये सेब के बीज



जॉन चैपमैन अमरीका का एक ऐसा लोक-नायक है जो एक वास्तविक व्यक्ति था. कोई दो सौ वर्ष पहले उसने अपने देश में कई जगह सेब के पेड़ लगाये थे, जिस कारण लोग उसे जॉनी एप्पलसीड के नाम से बुलाने लगे थे.

उसकी कहानी बहुत अनोखी और रोचक है, पर समय के साथ कहानी में कई बातें बढ़ा-चढ़ा कर कही गयी हैं. कुछ बातें शायद कभी घटी ही नहीं थीं. पर इतना तो सत्य है की जॉनी लोगों से ही नहीं, पशुओं से भी प्यार करता था और अमरीका के बीहड़ और जंगल भी उसे बहुत प्रिय थे.

जॉनी एप्पलसीड का असली नाम जॉन चैपमैन था. वो जहाँ जाता वहां पर सेब के बीज बोता. इसीलिए उनका नाम जॉनी एप्पलसीड पड़ गया था.



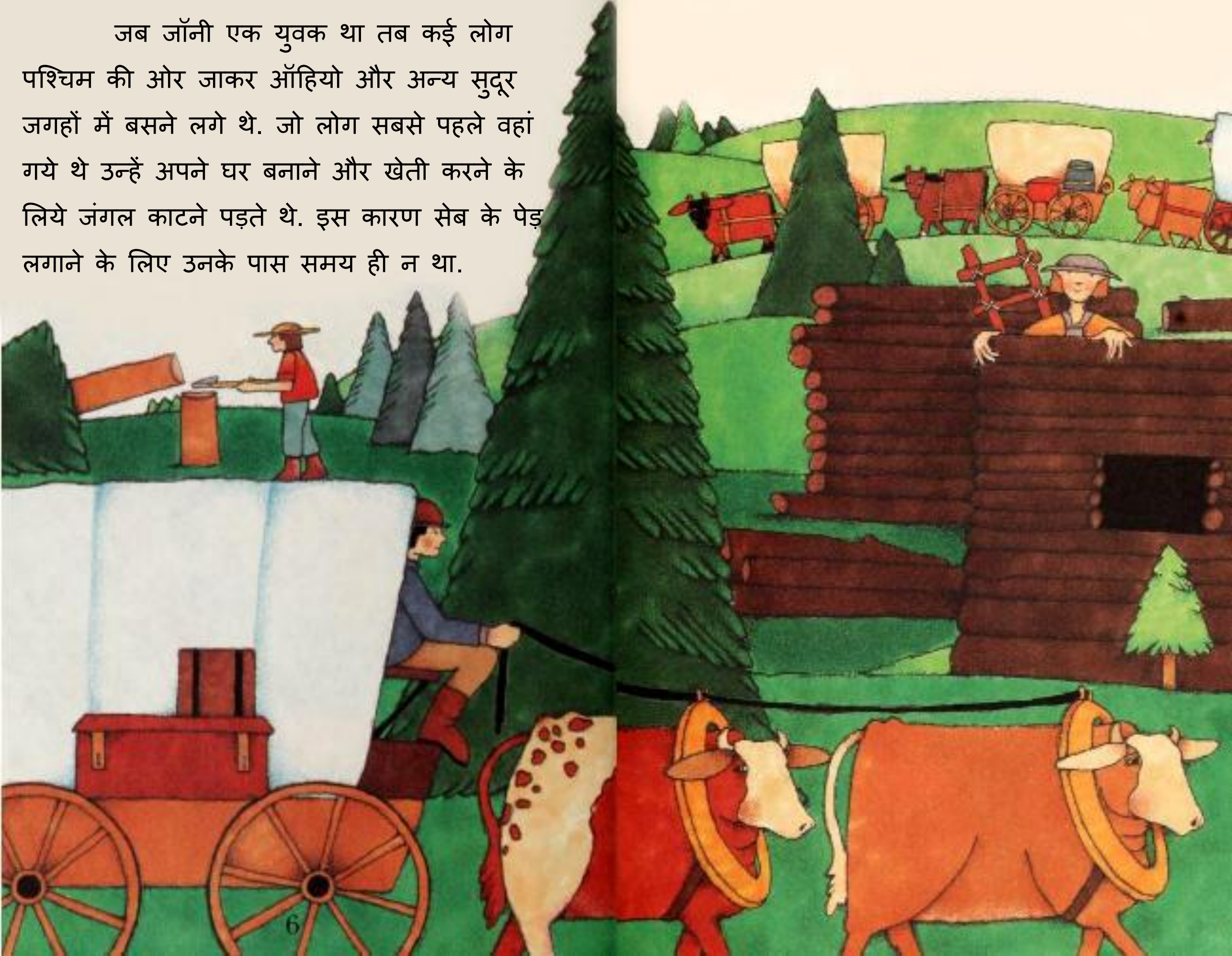
जॉनी का जन्म 26 सितम्बर 1774 के दिन मेसाचुसेट्स में हुआ था. उसके पिता एक किसान थे. खेती के काम में पिता का हाथ बटाना उसे अच्छा लगता था.



पर जॉनी को सबसे अच्छा लगता था सेब के पेड़ों की देखभाल करना. सेब के पेड़ों पर चढ़ कर, पके हुए लाल-लाल सेब तोड़ने में उसे खूब आनंद मिलता था.



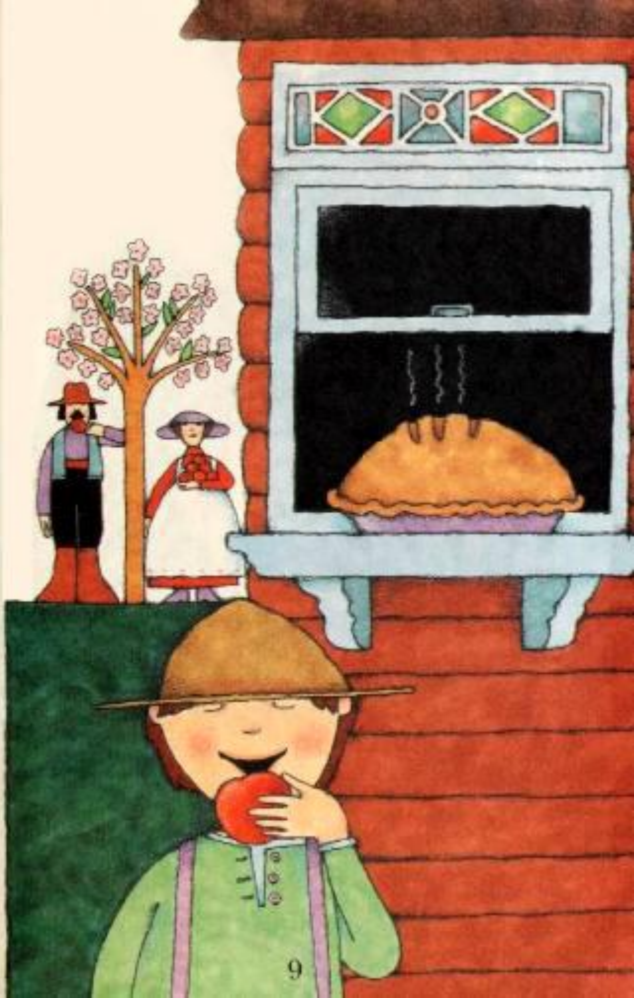
जब जॉनी एक युवक था तब कई लोग पश्चिम की ओर जाकर ऑहियो और अन्य सुदूर जगहों में बसने लगे थे. जो लोग सबसे पहले वहां गये थे उन्हें अपने घर बनाने और खेती करने के लिये जंगल काटने पड़ते थे. इस कारण सेब के पेड़ लगाने के लिए उनके पास समय ही न था.



जॉनी को जब पता लगा कि पश्चिम में बसने वाले इन लोगों के पास सेब के पेड़ न थे तो उसे बहुत बुरा लगा था. उसकी इच्छा थी कि उन लोगों को भी वसंत ऋतु में सेब की गुलाबी कलियाँ देखने का अवसर मिले. वह जानता था कि मीठे, पके सेब खाने में उन्हें मज़ा आयेगा और सर्दियों में गर्मा-गर्म एप्पल-पाई उनके मन भायेगी.

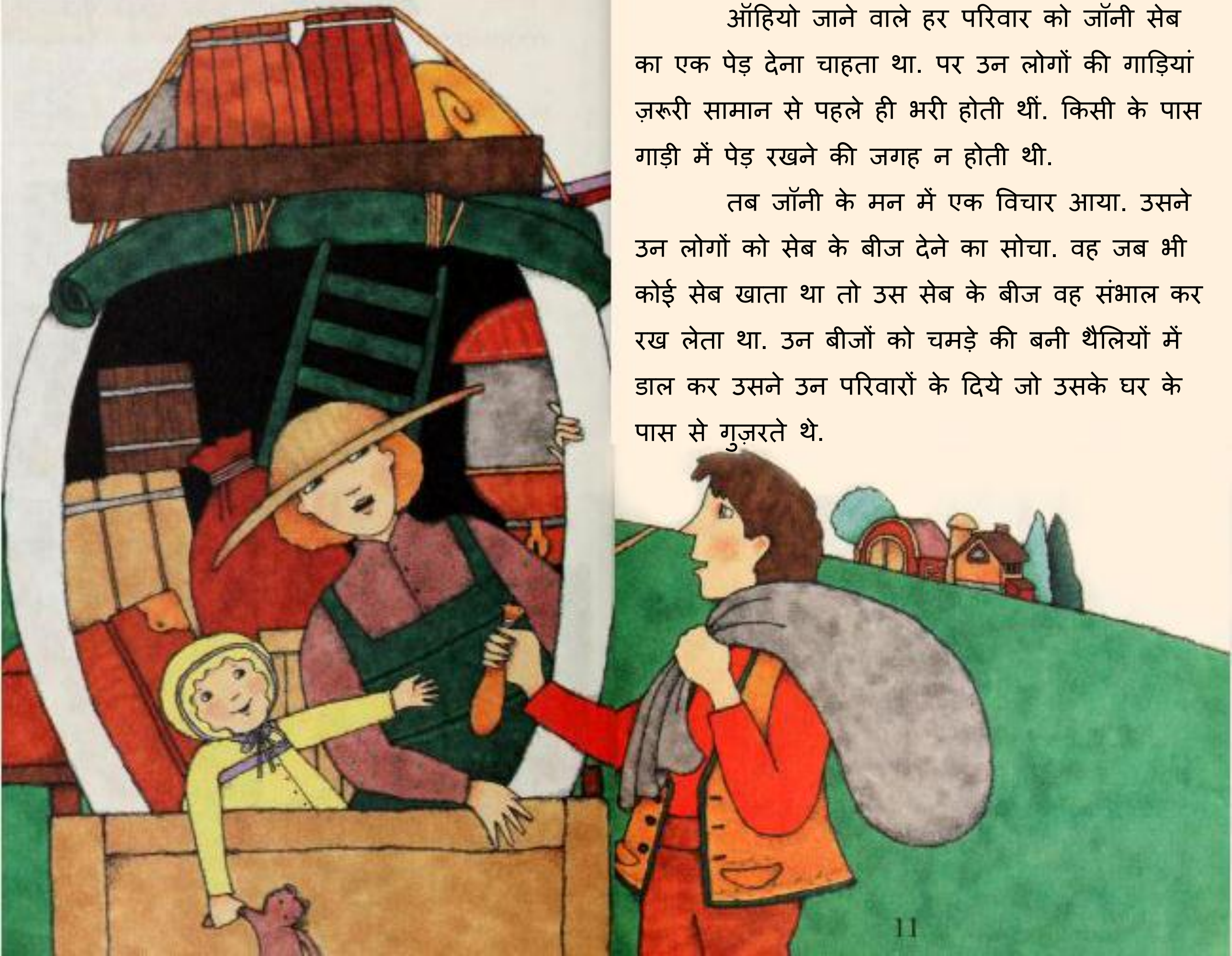
“इन लोगों की मदद करने का कोई रास्ता मुझे सोचना होगा,” जॉनी ने अपने-आप से कहा.





ऑहियो जाने वाले हर परिवार को जॉनी सेब का एक पेड़ देना चाहता था. पर उन लोगों की गाड़ियां ज़रूरी सामान से पहले ही भरी होती थीं. किसी के पास गाड़ी में पेड़ रखने की जगह न होती थी.

तब जॉनी के मन में एक विचार आया. उसने उन लोगों को सेब के बीज देने का सोचा. वह जब भी कोई सेब खाता था तो उस सेब के बीज वह संभाल कर रख लेता था. उन बीजों को चमड़े की बनी थैलियों में डाल कर उसने उन परिवारों के दिये जो उसके घर के पास से गुज़रते थे.





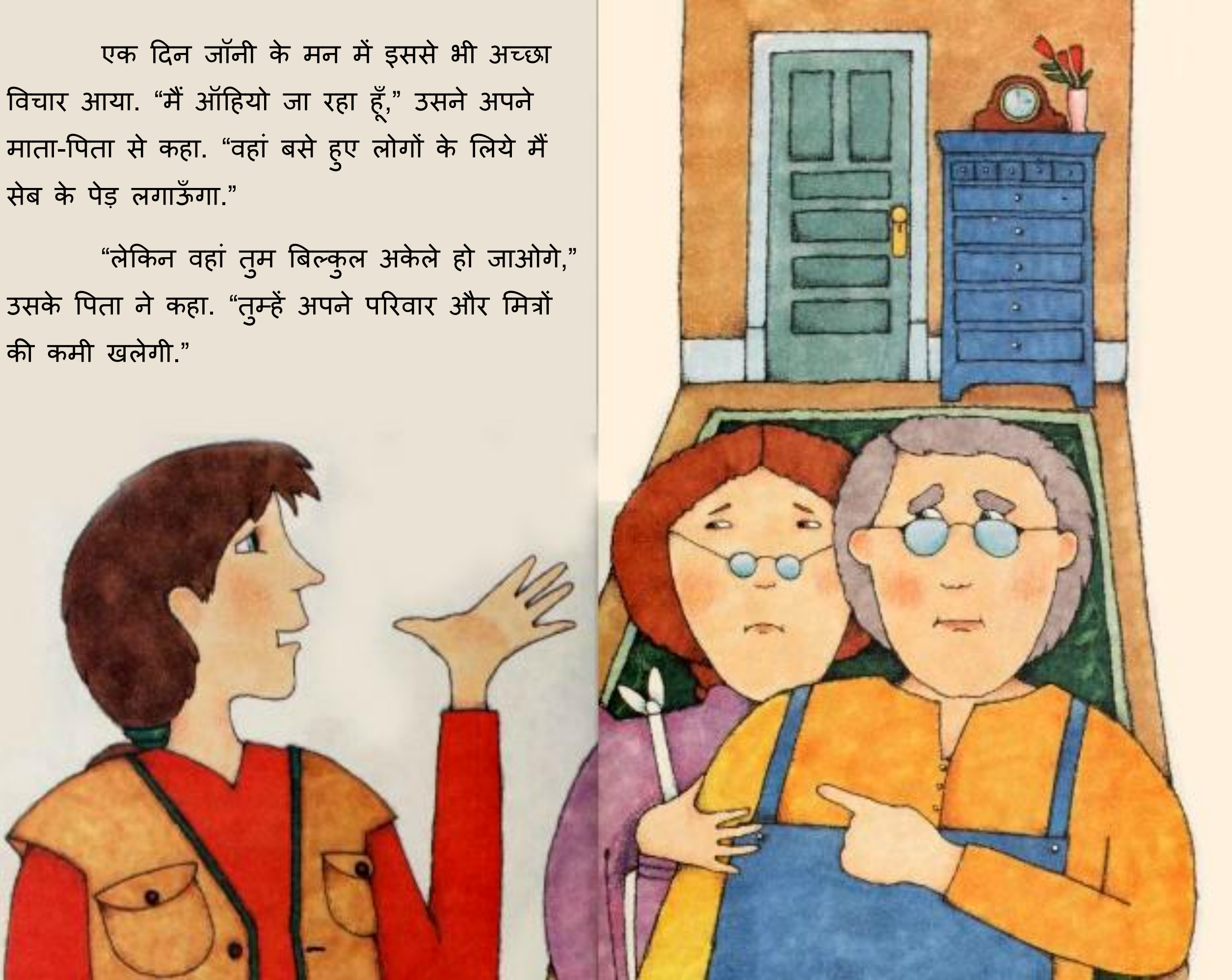
“बीज मिट्टी में बो कर एक छोटा-सा काँटों का बाड़ा बना देना,” जॉनी कहता. “हिरण नन्हें पौधे खा जाते हैं. और ध्यान रखना कि पेड़ों के आस-पास जंगली घास न उग पाए.”

बीजों के लिये सब उसका धन्यवाद करते थे, लेकिन बीज बोने का और सेब के पेड़ों की देखभाल करने का समय किसी के पास भी न था.



एक दिन जॉनी के मन में इससे भी अच्छा विचार आया. “मैं ऑहियो जा रहा हूँ,” उसने अपने माता-पिता से कहा. “वहां बसे हुए लोगों के लिये मैं सेब के पेड़ लगाऊँगा.”

“लेकिन वहां तुम बिल्कुल अकेले हो जाओगे,” उसके पिता ने कहा. “तुम्हें अपने परिवार और मित्रों की कमी खलेगी.”



“और उस वीरान जगह में तुम ऐसे ही अकेले नहीं जा सकते,” माता ने कहा. “वहां कितने जंगली जानवर होंगे. और अगर तुम बर्फीले तूफ़ान में फंस गये तो? और तुम सोओगे कहाँ पर?”

“मैं खुले आकाश के नीचे सोऊंगा,” जॉनी ने कहा. “आकाश ही सबसे अच्छी छत है जो किसी को मिल सकती है.”





जॉनी के माता-पिता अब भी चिंतित थे. वह समझ गये थे कि जॉनी ने जाने का निश्चय कर लिया था. उन्होंने सामान इकट्ठा करने में उसकी मदद की. माँ ने उसके लिये एक गर्म कोट बनाया. अपना सबसे बढ़िया कुकिंग पैन उसे दे दिया ताकि वह अपना खाना पका सके.



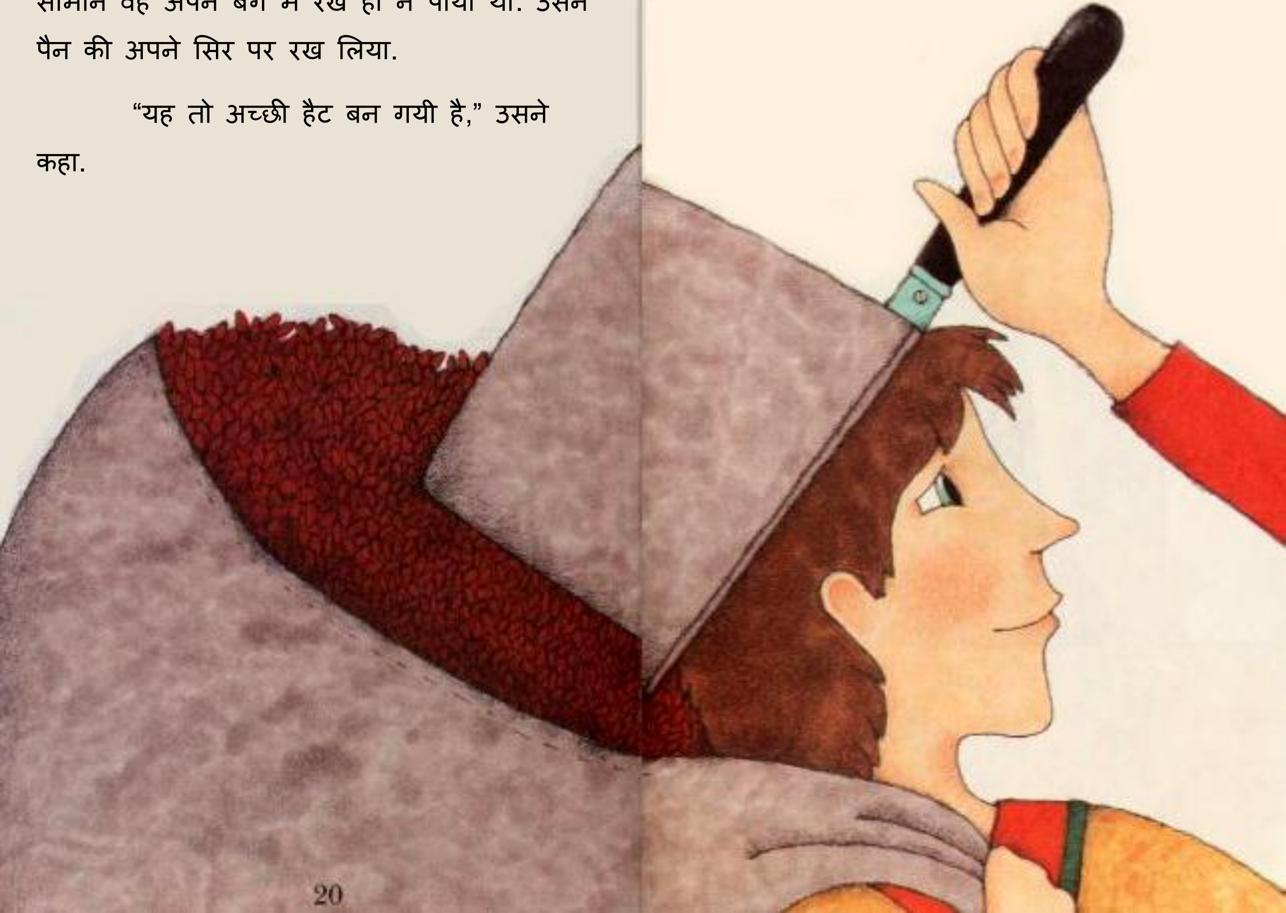
जाने से पहले जॉनी सेब का जूस बनाने वाली एक मिल में गया. जूस बनाने के लिये मिल में बहुत सारे सेबों का इस्तेमाल किया जाता था. जॉनी ने सेब के बीज मांगे.

“जितने बीज लेना चाहते हो ले लो,” मिल के मालिक ने कहा.



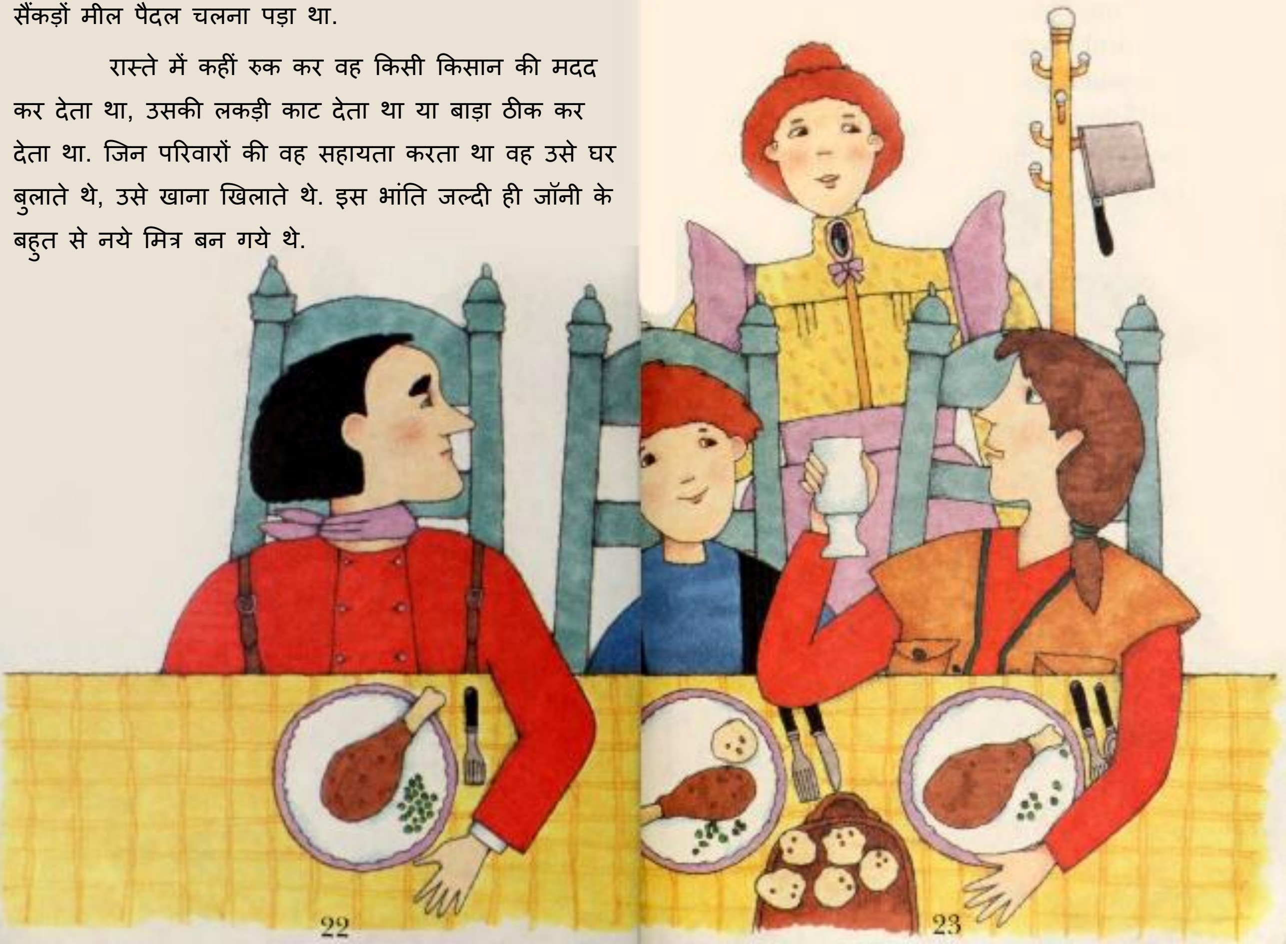
जॉनी ने इतने बीज ले लिये कि सारा सामान वह अपने बैग में रख ही न पाया था. उसने पैन की अपने सिर पर रख लिया.

“यह तो अच्छी हैट बन गयी है,” उसने कहा.

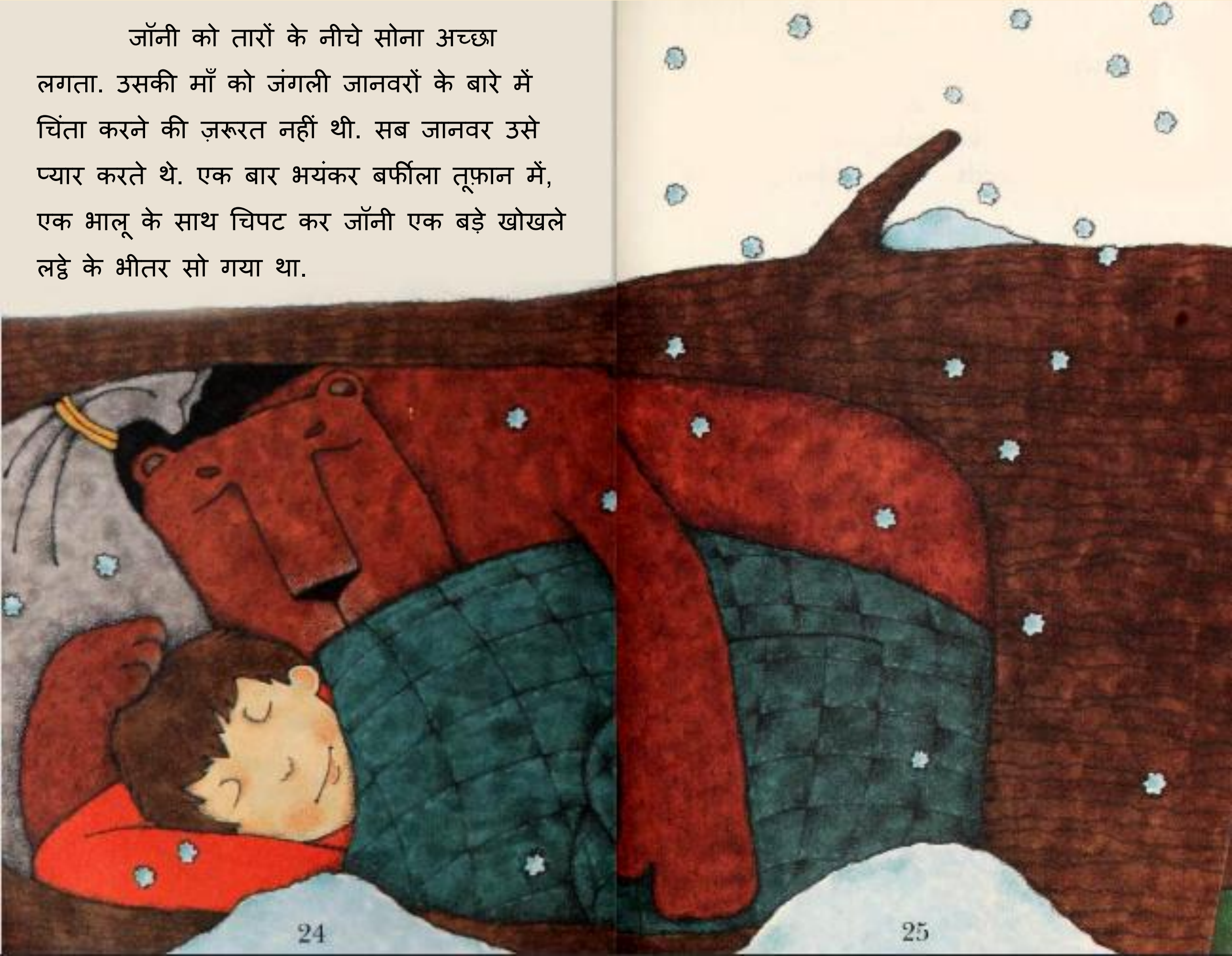


यात्रा कठिन थी. सेब के बीज उठाये हुए जॉनी को सैंकड़ों मील पैदल चलना पड़ा था.

रास्ते में कहीं रुक कर वह किसी किसान की मदद कर देता था, उसकी लकड़ी काट देता था या बाड़ा ठीक कर देता था. जिन परिवारों की वह सहायता करता था वह उसे घर बुलाते थे, उसे खाना खिलाते थे. इस भांति जल्दी ही जॉनी के बहुत से नये मित्र बन गये थे.



जॉनी को तारों के नीचे सोना अच्छा लगता. उसकी माँ को जंगली जानवरों के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं थी. सब जानवर उसे प्यार करते थे. एक बार भयंकर बर्फीला तूफ़ान में, एक भालू के साथ चिपट कर जॉनी एक बड़े खोखले लट्ठे के भीतर सो गया था.



आखिरकार जब जॉनी ऑहियो पहुंचा तो उसने नदी किनारे बीज बो दिये. बीजों को सुरक्षित रखने के लिए कांटो भरी झाड़ियों से बाड़ा बना दिया था.

फिर जॉनी किसी दूसरी जगह चला गया था और वहां भी बीज बोये थे. लेकिन वह वापस लौट कर बीजों से निकले नन्हें पौधों की पूरी देखभाल करता था.



जब अंकुरित पौधे थोड़े बड़े हो गये तो उसने उन्हें ज़मीन से बाहर निकल लिया था. उन छोटे पौधों को लेकर वह वहां रहने वाले लोगों के घर गया था ताकि वह लोग सेब के पेड़ लगा पायें.





"कुछ वर्षों में आप इन पेड़ों के फल खा पायेंगे," जॉनी ने कहा. "और वसंत ऋतु में सेब की गुलाबी कलियों को देख पायेंगे. ऐसा सुंदर दृश्य किसी भी जगह देखने को न मिलेगा."

ऑहियो घाटी में बसे लोगों के घरों के पास जॉनी ने हज़ारों पेड़ लगाए थे. जल्दी ही लोग उसे जॉनी एप्पलसीड के नाम से बुलाने लगे थे.

वह अन्य तरीकों से भी उन लोगों की सहायता करता था. वह पेड़ों के ठूँठ खींच कर हटाता था, अनाज बोता था, घरों के लिये फर्नीचर बनाता था.



लोग उत्सुकता से उसके आने की प्रतीक्षा करते थे.

“चलो बच्चो, हाथ-मुंह धोकर खाने के लिये आ जाओ,” मातायें बच्चों से कहतीं. “जॉनी एप्पलसीड आज रात हमारे घर आयेगा!”



जॉनी एप्पलसीड ने अपना सारा जीवन लोगों की सहायता करने में बिता दिया. उसके जीवनकाल में ही ऑहियो की सारी घाटी सेबों की कलियों से महकने लगी थी. आज भी लोग जब सेबों के बाग़ देखते हैं तो उन्हें जॉनी एप्पलसीड की याद आती है.



समाप्त